B.A. PART-1
हिन्दी-(प्रतिष्ठा)-प्रथम-पत्र
हिन्दी साहित्य का इतिहास

भाग-1

प्रश्न :- आदिकाल की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ बतायें ?

उत्तर :- आदिकालीन साहित्य में उपलब्ध होने वाली प्रवृत्तियाँ तत्कालीन परिस्थितियों के संदर्भ में देखी जानी चाहिए। इस काल में प्रमुख रूप से रासो साहित्य की रचना हुई, अतः आदिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियाँ रासो साहित्य की प्रवृत्तियाँ ही मानी जा सकती हैं। आदिकालीन जैन साहित्य वस्तुतः अपभ्रंश भाषा में लिखा गया है, अतः उसे आधारभूत सामग्री के रूप में हम ग्रहण नहीं कर सकते। रासो ग्रन्थों में भी बहुत सारे ग्रंथ कालांतर में परिवर्तित एवं परिवर्धित हुए तथापि उनका मूल रूप आदिकाल में ही रचा गया, यह प्रमाणित हो चुका है, अतः रासो साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों को ही आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ कहना समीचीन प्रतीत होता है। इन ग्रंथों में पायी जाने वाली सामान्य प्रवृत्तियों का विवेचन निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है—

1. ऐतिहासिकता का अभाव :-

रासो साहित्य के चरित-नायक ऐतिहासिक व्यक्ति हैं, किन्तु इन काव्य-ग्रंथों में ऐतिहासिकता की रक्षा नहीं की गई है। वस्तुतः इन ग्रंथों में तथ्य कम है, कल्पना अधिक है, परिणामतः अनेक ऐतिहासिक भ्रांतियाँ उत्पन्न होती हैं। इन ग्रंथों के रचयिताओं ने जो वर्णन किये हैं, वे तत्कालीन इतिहास से मेल नहीं खाते। घटनाओं, नामावली, तिथियों का जो विवरण रासो काव्यों में उपलब्ध होता है, वह इतिहाससम्मत नहीं है। ऐतिहासिक चरित-नायकों को लेकर लिखे गये काव्य-ग्रन्थों में जिस सावधानी की अपेक्षा की जाती है, उससे ये नितांत विमुख रहे हैं, परिणामतः इन ग्रंथों से किसी ऐतिहासिक तथ्य एवं सत्य का उद्घाटन नहीं होता। इतिहास में अतिशयोक्ति से बचा जाता है, जबकि

चारण कवियों ने अतिशयोक्ति को प्रमुखता देते हुए काल्पनिक वर्णन किए हैं, यही कारण है कि इन ग्रंथों में ऐतिहासिकता का अभाव है।

२. युद्ध-वर्णन में सजीवता:

रासो ग्रंथों में किये गए युद्ध-वर्णन सजीव प्रतीत होते हैं इन काव्य-ग्रन्थों में जहाँ-जहाँ युद्ध-वर्णन के प्रसंग है, वहाँ-वहाँ ऐसा प्रतीत होता है, जैसे कवि युद्ध का आँखों देखा हाल सुना रहा है। चारण कवि कलम के ही नहीं तलवार के भी धनी थे, अतः अवसर पड़ने पर अपने-अपने आश्रयदाताओं के साथ रणक्षेत्र में जाकर तलवार के हाथ भी दिखाते थे। युद्ध के दृश्यों को उन्होंने अपनी आँखों से देखा था, अतः इन युद्ध-वर्णनों में जो कुछ भी कहा गया है, वह उसकी अपनी वास्तविक अनुभूति है। इन कवियों ने केवल सैन्य बल का ही नहीं अपितु योद्धाओं की उमंगों, मनोदशाओं एवं क्रियाकलापों का सुन्दर वर्णन किया है। इन युद्ध-प्रसंगों में कवि की कल्पना का चमत्कार न होकर वीर हृदयों के उच्छ्वासों का स्पंदन है। तत्कालीन परिस्थितियों के कारण युद्ध एक अनिवार्य आवश्यकता थी, अतः एक ऐसे वर्ग की अपेक्षा राजाओं को रहती थी जो वीरों को युद्ध के लिए प्रोत्साहित कर सके। चारण कवि इसी आवश्यकता की पूर्ति करते थे। इनके योगदान की चर्चा करते हुए आचार्य हजारी-प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है। "देश पर सब ओर से आक्रमण की संभावना थी। निरंतर युद्ध के लिए प्रोत्साहित करने को भी एक वर्ग आवश्यक हो गया था। चारण इसी श्रेणी के लोग थे। उनका कार्य ही था हर प्रसंग में आश्रयदाता के युद्धोन्माद को उत्पन्न कर देने वाली घटना-योजना को

आविष्कार।" पृथ्वीराज रासो अपने युद्ध-वर्णनों के कारण भी एक सशक्त रचना मानी जाती है।

3. प्रामाणिकता में संदेह :

आदिकाल के अधिकांश रासो काव्यों की प्रामाणिकता संदिग्ध है। पृथ्वीराजरासो जो इस काल की प्रमुख रचना बतायी गई है, भी अप्रमाणिक मानी गई है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार — " इसके अतिरिक्त और कुछ कहने की जगह नहीं कि यह पूरा ग्रंथ वास्तव में जाली है।" इसी प्रकार खुमान रासो और परमाल रासो की प्रामाणिकता में भी संदेह है। मूल कवि की रचना में अन्य लोगों ने कब और कितना अंश प्रक्षिप्त रूप में जोड़ दिया है, इसका निर्णय कर पाना कठिन है। भाषा-शैली और विषय-सामग्री के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि ये रासो-काव्य समय-समय पर परिवर्तित एवं परिवर्धित होते रहते हैं।

4. वीर एवं श्रृंगार रस की प्रधानता :

रासो ग्रंथों में यद्यपि सभी रसों का समावेश हुआ है, तथापि वीर एवं श्रृंगार रस की प्रधानता इनमें परिलक्षित होती है। युद्धों का वर्णन होने से वीर रस की योजना इनमें अनायास ही हो गई है। पृथ्वीराज रासो में ऐसे अनेक मर्मस्पर्शी स्थल हैं जहाँ वीर रस का पूर्ण परिपाक हुआ है, युद्ध-शौर्य-प्रदर्शन के लिए तथा सुन्दर राजकुमारियों से विवाह करने के निमित्त लड़े जाते थे, अतः श्रृंगार रस के भावपूर्ण वर्णनों का समावेश भी इन काव्य-ग्रंथों में हो गया है, राजकुमारियों के स्वप्निल सौन्दर्य का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन नख-शिख परिपाटी पर किया गया है, नायिका के रूप सौन्दर्य के साथ-साथ वयः संधि और षट्ऋतु वर्णन का सम्यक समावेश भी रासो ग्रन्थ में किया गया है।

(शेष क्रमशः अगले में पढ़ें)

दिनांक - 21/01/2022
मो०न० - 7909046087

डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग - हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U. M)